DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
B.A. PART-III Public Administration Paper-V
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. SEP-LECTURE-02 Date 02/09/2020

लोक प्रशासन की प्रकृति
(Nature of public Administration)

लोक प्रशासन की प्रकृति के सम्बन्ध में विद्वानों में अत्यधिक व्यापक विरोधाभास अथवा विवाद मौजूद है। इसके बावजूद इसकी प्रकृति के सम्बन्ध में तीन प्रमुख दृष्टिकोण प्रचलित हैं। जो निम्नवत हैं

(1) एकीकृत दृष्टिकोण (Integral view) — एकीकृत दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सम्पादित की जाने वाली क्रियाओं का समग्र योग है। विचारक फिफनर, F.M.मार्क्स एल.डी० व्हाइट, इस दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक हैं।

(2) प्रबन्धात्मक दृष्टिकोण — (Managerial view) इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन में केवल उन्हीं लोगों के कार्यों को शामिल किया जाता है। जिनकी प्रबन्धकीय कार्यों मे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विचारक लूथर गुलिक, साइमन, स्मिथबर्ग तथा थाम्पसन इस दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक है।

(3) आधुनिक दृष्टिकोण — (Modern view) इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन की प्रकृति उसके सन्दर्भ पर निर्भर करती है। इसके समर्थक विचारक ग्लैडन, जान एफ०पीटर, डिमाक, कोडिनिंग है।

P.T.O

उपयुक्त तीनो दृष्टिकोणों में आधुनिक दृष्टिकोण को ही सही एवं संतुलित माना जाता है। आधुनिक युग के लोक प्रशासन के अधिकांश विद्वान इसी दृष्टिकोण का समर्थन करते हुये प्रतित होते है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner